وَّالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا
مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۚ كِتٰبَ اللّٰهِ
عَلَيْكُمْ ۚ وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ
اَنْ تَبْتَغُوْا بِاَمْوَالِكُمْ مُّحْصِنِيْنَ
غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ ؕ فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ
بِهٖ مِنْهُنَّ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ
فَرِيْضَةً ؕ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا
تَرٰضَيْتُمْ بِهٖ مِنْۢ بَعْدِ الْفَرِيْضَةِ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۲۴﴾
وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا اَنْ
يَّنْكِحَ الْمُحْصَنٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ فَمِنْ
مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ فَتَيٰتِكُمُ
الْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِكُمْ ؕ
بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ فَانْكِحُوْهُنَّ
بِاِذْنِ اَهْلِهِنَّ وَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ
بِالْمَعْرُوْفِ مُحْصَنٰتٍ غَيْرَ
مُسٰفِحٰتٍ وَّلَا مُتَّخِذٰتِ اَخْدَانٍ ۚ
فَاِذَآ اُحْصِنَّ فَاِنْ اَتَيْنَ بِفَاحِشَةٍ
فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنٰتِ
مِنَ الْعَذَابِ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ

24. और शौहरवाली औ़रतें (भी तुम पर ह़राम हैं) सिवाए उन (जंगी क़ैदी औ़रतों) के जो तुम्हारी मिल्कमें आ जाएं, (इन अह़्कामे हुर्मत को) अल्लाह तआ़लाने तुम पर फ़र्ज़ कर दिया है, और उनके सिवा (सब औ़रतें) तुम्हारे लिए ह़लाल कर दी गई हैं ताकि तुम अपने अमवाल के ज़रीए़ तलबे निकाह़ करो पाक दामन रेहते हुए न कि शहवत रानी करते हुए, फिर उन में से जिनसे तुमने उस (माल) के इ़वज़ फ़ायदा उठाया है उन्हें उनका मुक़र्रर शुदह मह्र अदा कर दो, और तुम पर उस मालके बारे में कोई गुनाह नहीं जिस पर तुम मह्र मुक़र्रर करने के बाद बाहम रज़ामन्द हो जाओ, बेशक अल्लाह ख़ूब जाननेवाला बड़ी ह़िक्मतवाला है।

25. और तुममें से जो कोई (इत्नी) इस्तिताअ़त न रखता हो कि आज़ाद मुसलमान औ़रतों से निकाह़ कर सके तो उन मुसलमान कनीज़ों से निकाह कर ले जो (शरअ़न) तुम्हारी मिल्किय्यत में हैं, और अल्लाह तुम्हारे ईमान (की कैफ़िय्यत) को ख़ूब जानता है, तुम (सब) एक दूसरे की जिन्स में से ही हो, पस उन (कनीज़ों) से उनके मालिकों की इजाज़त के साथ निकाह़ करो और उन्हें उनके महर ह़स्बे दस्तूर अदा करो दर आं ह़ाली कि वोह (इ़फ़्फ़त क़ाइम रखते हुए) क़ैदे निकाह़में आनेवाली हों न बदकारी करनेवाली हों और न दर पर्दह आश्नाई करनेवाली हों, पस जब वोह निकाह़ के ह़िसार में आ जाएं फिर अगर बदकारी की मुर्तकिब हों तो उन पर उस सज़ा की आधी सज़ा लाज़िम है जो आज़ाद (कुंवारी) औ़रतों के लिए (मुक़र्रर) है, येह इजाज़त उस शख़्स के लिए है जिसे तुम में से गुनाह (के इर्तिकाब) का अंदेशा हो, और अगर तुम सब्र करो तो (येह) तुम्हारे ह़क़ में

الْعَنَتَ مِنْكُمْ ۭ وَ اَنْ تَصْبِرُوْا خَيْرٌ
لَّكُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٥﴾ ع

बेहतर है, और अल्लाह बख़्शनेवाला महरबान है।

يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَ يَهْدِيَكُمْ
سُنَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَيَتُوْبَ
عَلَيْكُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٦﴾

26. अल्लाह चाहता है कि तुम्हारे लिए (अपने अह्काम की) वज़ाहत फ़रमा दे और तुम्हें उन (नेक) लोगों की राहों पर चलाए जो तुमसे पहले हो गुज़रे हैं और तुम्हारे ऊपर रह्मत के साथ रुजूअ़ फ़रमाए, और अल्लाह ख़ूब जाननेवाला बड़ी हिक्मतवाला है।

وَ اللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْكُمْ ۣ
وَ يُرِيْدُ الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الشَّهَوٰتِ
اَنْ تَمِيْلُوْا مَيْلًا عَظِيْمًا ﴿٢٧﴾

27. और अल्लाह तुम पर महरबानी फ़रमाना चाहता है, और जो लोग ख़्वाहिशाते (नफ़्सानी) की पैरवी कर रहे हैं वोह चाहते हैं कि तुम राहे रास्तसे भटक कर बहुत दूर जा पड़ो।

يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّخَفِّفَ عَنْكُمْ ۚ وَ
خُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا ﴿٢٨﴾

28. अल्लाह चाहता है कि तुमसे बोझ हल्का कर दे, और इन्सान कमज़ोर पैदा किया गया है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْٓا
اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّآ اَنْ
تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ ۣ
وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ
بِكُمْ رَحِيْمًا ﴿٢٩﴾

29. ऐ ईमान वालो! तुम एक दूसरे का माल आपस में नाहक़ तरीक़े से न खाओ सिवाए इसके कि तुम्हारी बाहमी रज़ामंदी से कोई तिजारत हो, और अपनी जानों को मत हलाक करो, बेशक अल्लाह तुम पर महरबान है।

وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ عُدْوَانًا وَّظُلْمًا
فَسَوْفَ نُصْلِيْهِ نَارًا ۭ وَكَانَ ذٰلِكَ
عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿٣٠﴾

30. और जो कोई तअ़द्दी और ज़ुल्म से ऐसा करेगा तो हम अ़नक़रीब उसे (दोज़ख़ की) आग में डाल देंगे, और येह अल्लाह पर बिल्कुल आसान है।

اِنْ تَجْتَنِبُوْا كَبَاۗىِٕرَ مَا تُنْهَوْنَ

31. अगर तुम कबीरह गुनाहों से जिन से तुम्हें रोका गया

عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ مُّدْخَلًا كَرِيْمًا ﴿٣١﴾

है बचते रहो तो हम तुम से तुम्हारी छोटी बुराइयां मिटा देंगे और तुम्हें इ़ज़्ज़तवाली जगह में दाख़िल फ़रमा देंगे।

وَ لَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللّٰهُ بِهٖ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوْا ؕ وَ لِلنِّسَآءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ ؕ وَسْـَٔلُوا اللّٰهَ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿٣٢﴾

32. और तुम उस चीज़ की तमन्ना न किया करो जिसमें अल्लाहने तुममें से बा'ज़ को बा'ज़ पर फ़ज़ीलत दी है, मर्दों के लिए उसमें से हिस्सा है जो उन्होंने कमाया, और औ़रतों के लिए उसमें से हिस्सा है जो उन्होंने कमाया, और अल्लाहसे उसका फ़ज़्ल माँगा करो, बेशक अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जाननेवाला है।

وَ لِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ؕ وَ الَّذِيْنَ عَقَدَتْ اَيْمَانُكُمْ فَاٰتُوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدًا ﴿٣٣﴾ ع ٥ ٨ ٢

33. और हमने सबके लिए मां बाप और क़रीबी रिश्तेदारों के छोड़े हुए मालमें ह़क़्क़दार (या'नी वारिस) मुक़र्रर कर दिए हैं, और जिनसे तुम्हारा मुआ़हिदा हो चुका है सो उन्हें उनका हिस्सा दे दो, बेशक अल्लाह हर चीज़ का मुशाहिदा फ़रमानेवाला है।

اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ وَّبِمَآ اَنْفَقُوْا مِنْ اَمْوَالِهِمْ ؕ فَالصّٰلِحٰتُ قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللّٰهُ ؕ وَ الّٰتِيْ تَخَافُوْنَ نُشُوْزَهُنَّ فَعِظُوْهُنَّ وَاهْجُرُوْهُنَّ فِي الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوْهُنَّ ۚ فَاِنْ

34. मर्द-औ़रतों पर मुह़ाफ़िज़ो मुन्तज़िम हैं इस लिए किअल्लाहने उनमें से बा'ज़ को बा'ज़ पर फ़ज़ीलत दी है और इस वजह से (भी) कि मर्द (उन पर) अपने माल ख़र्च करते हैं, पस नेक बीवियां इताअ़त शिआ़र होती हैं शौहरों की अ़दम मौजूदगी में अल्लाह की हिफ़ाज़त के साथ (अपनी इ़ज़्ज़त की) हिफ़ाज़त करनेवाली होती हैं और तुम्हें जिन औरतों की नाफ़रमानी व सरकशी का अंदेशा हो तो उन्हें नसीह़त करो और (अगर न समझें तो) उन्हें ख़्वाबगाहों में (खुद से) अ़लाहिदा कर दो और (अगर फिर भी इस्लाह़ पज़ीर न हों तो) उन्हें (तादीबन

اَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوْا عَلَيْهِنَّ سَبِيْلًا ؕ
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيًّا كَبِيْرًا ﴿۳۴﴾

हल्का सा) मारो फिर अगर वोह तुम्हारी फ़रमां बर्दार हो जाएं तो उन के ख़िलाफ़ कोई रास्ता तलाश न करो, बेशक अल्लाह सबसे बुलन्द सबसे बड़ा है।

وَاِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوْا
حَكَمًا مِّنْ اَهْلِهٖ وَ حَكَمًا مِّنْ
اَهْلِهَا ۚ اِنْ يُّرِيْدَآ اِصْلَاحًا يُّوَفِّقِ
اللّٰهُ بَيْنَهُمَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا
خَبِيْرًا ﴿۳۵﴾

35.और अगर तुम्हें उन दोनों के दरमियान मुख़ालिफ़त का अंदेशा हो तो तुम एक मुन्सिफ़ मर्द के ख़ानदान से और एक मुन्सिफ़ औरत के ख़ानदान से मुक़र्रर कर लो, अगर वोह दोनों (मुन्सिफ़) सुलह कराने का इरादा रख्खें तो अल्लाह उन दोनों के दरमियान मुवाफ़िक़त पैदा फ़रमा देगा, बेशक अल्लाह ख़ूब जाननेवाला ख़बरदार है।

وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـًٔا وَّ
بِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّبِذِى الْقُرْبٰى
وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَ الْجَارِ ذِى
الْقُرْبٰى وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ
بِالْجَنْۢبِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ وَمَا مَلَكَتْ
اَيْمَانُكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ
كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرَا ﴿۳۶﴾ ۙ

36. और तुम अल्लाह की इबादत करो और उसके साथ किसी को शरीक न ठेहराओ और मां बाप के साथ भलाई करो और रिश्तेदारों और यतीमों और मोहताजों (से) और नज़दीकी हमसाए और अजनबी पड़ौसी और हम मजलिस और मुसाफ़िर (से), और जिनके तुम मालिक हो चुके हो, (उनसे नेकी किया करो), बेशक अल्लाह उस शख़्स को पसंद नहीं करता जो तकब्बुर करनेवाला (मग़रूर) फ़ख़्र करने वाला (ख़ुदबीन) हो।

الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَاْمُرُوْنَ النَّاسَ
بِالْبُخْلِ وَيَكْتُمُوْنَ مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ
مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ
عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿۳۷﴾ ۚ

37.जो लोग (ख़ुद भी) बुख़्ल करते हैं और लोगों को (भी) बुख़्ल का हुक्म देते हैं और उस (ने'मत) को छुपाते हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से अ़ता की है, और हमने काफ़िरों के लिए ज़िल्लत अंगेज़ अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।

وَ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ رِئَآءَ
النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ لَا

38. और जो लोग अपने माल लोगों के दिखावे के लिए ख़र्च करते हैं और न अल्लाह पर ईमान रखते हैं और

بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَمَنْ يَّكُنِ
الشَّيْطٰنُ لَهٗ قَرِيْنًا فَسَآءَ قَرِيْنًا ﴿۳۸﴾

न यौमे आख़िरत पर, और शैतान जिसका भी साथी हो गया तो वोह बुरा साथी है।

وَمَاذَا عَلَيْهِمْ لَوْ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَ
الْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقَهُمُ
اللّٰهُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِهِمْ عَلِيْمًا ﴿۳۹﴾

39. और उनका क्या नुक़्सान था अगर वोह अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान ले आते और जो कुछ अल्लाहने उन्हें दिया था उसमें से (उसकी राहमें) ख़र्च करते, और अल्लाह उन (के ह़ाल) से ख़ूब वाक़िफ़ है।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۚ وَ
اِنْ تَكُ حَسَنَةً يُّضٰعِفْهَا وَيُؤْتِ
مِنْ لَّدُنْهُ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۴۰﴾

40. बेशक अल्लाह ज़र्रा बराबर भी ज़ुल्म नहीं करता, और अगर कोई नेकी हो तो उसे दो गुना कर देता है और अपने पास से बड़ा अज्र अ़ता फ़रमाता है।

فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍۢ بِشَهِيْدٍ
وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰۤؤُلَآءِ شَهِيْدًا ﴿۴۱﴾ ط

وقف النبی صلی اللہ علیہ وسلم

41. फिर उस दिन क्या ह़ाल होगा जब हम हर उम्मतसे एक गवाह लाएंगे और (ऐ ह़बीब!) हम आपको उन सब पर गवाह लाएंगे।

يَوْمَئِذٍ يَّوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَعَصَوُا
الرَّسُوْلَ لَوْ تُسَوّٰى بِهِمُ الْاَرْضُ ؕ
وَلَا يَكْتُمُوْنَ اللّٰهَ حَدِيْثًا ﴿۴۲﴾ ع

ع ٦ ٣

42. उस दिन वोह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया और रसूल (ﷺ) की नाफ़रमानी की आरज़ू करेंगे कि काश (उन्हें मिट्टीमें दबाकर) उन पर ज़मीन बराबर कर दी जाती, और वोह अल्लाह से कोई बात न छुपा सकेंगे।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ
وَاَنْتُمْ سُكٰرٰى حَتّٰى تَعْلَمُوْا مَا
تَقُوْلُوْنَ وَلَا جُنُبًا اِلَّا عَابِرِيْ سَبِيْلٍ
حَتّٰى تَغْتَسِلُوْا ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰۤى اَوْ
عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ
الْغَآئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا
مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا

43. ऐ ईमानवालो! तुम नशे की ह़ालत में नमाज़ के क़रीब मत जाओ यहां तक कि तुम वोह बात समझने लगो जो केहते हो और न ह़ालते जनाबत में (नमाज़ के क़रीब जाओ) ता आंकि तुम ग़ुस्ल कर लो सिवाए इसके कि तुम सफ़र में हो या रास्ता तय कर रहे हो, और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में तुम में से कोई क़ज़ाए ह़ाजत से लौटे या तुम ने (अपनी) औ़रतों से मुबाशिरत की हो फिर तुम पानी न पा सको तो तुम पाक मिट्टी से तयम्मुम कर लो

بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُوْرًا ﴿۴۳﴾

पस अपने चेहरों और अपने हाथों पर मसह़् कर लिया करो, बेशक अल्लाह मुआ़फ़ फ़रमाने बहुत बख़्शनेवाला है।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يَشْتَرُوْنَ الضَّلٰلَةَ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ تَضِلُّوا السَّبِيْلَ ﴿۴۴﴾ؕ

44. क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें (आस्मानी) किताब का एक हिस्सा अ़ता किया गया वोह गुमराही ख़रीदते हैं और चाहते हैं कि तुम (भी) सीधे रास्ते से बहक जाओ।

وَ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِاَعْدَآئِكُمْ ؕ وَ كَفٰى بِاللّٰهِ وَلِيًّا ۙ وَّ كَفٰى بِاللّٰهِ نَصِيْرًا ﴿۴۵﴾

45.और अल्लाह तुम्हारे दुश्मनों को ख़ूब जानता है, और अल्लाह (बतौर) कारसाज़ काफ़ी है और अल्लाह (बतौर) मददगार काफ़ी है।

مِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ وَ يَقُوْلُوْنَ سَمِعْنَا وَ عَصَيْنَا وَاسْمَعْ غَيْرَ مُسْمَعٍ وَّرَاعِنَا لَيًّا بِاَلْسِنَتِهِمْ وَ طَعْنًا فِى الدِّيْنِ ؕ وَ لَوْ اَنَّهُمْ قَالُوْا سَمِعْنَا وَ اَطَعْنَا وَاسْمَعْ وَ انْظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَ اَقْوَمَ ۙ وَ لٰكِنْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۴۶﴾

46. और कुछ यहूदी (तौरात के) कलिमात को अपने (अस्ल) मुक़ामात से फेर देते हैं और केहते हैं हमने सुन लिया और नहीं माना और (येह भी केहते हैं) सुनिए! (मआ़ज़ल्लाह) आप सुनवाए न जाएं और अपनी ज़बानें मरोड़ कर दीन में ता'ना ज़नी करते हुए ''राइ़ना'' केहते हैं, और अगर वोह लोग (इसकी जगह) येह केहते कि हमने सुना और हमने इताअ़त की और (हुज़ूर! हमारी गुज़ारिश) सुनिये और हमारी तरफ़ नज़रे (करम) फ़रमाइये तो येह उनके लिए बेहतर होता और (येह क़ौल भी) दुरुस्त और मुनासिब होता, लेकिन अल्लाहने उनके कुफ़्रके बाइ़स उन पर ला'नत की सो थोड़े लोगों के सिवा वोह ईमान नहीं लाते।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اٰمِنُوْا بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّطْمِسَ وُجُوْهًا فَنَرُدَّهَا عَلٰۤى اَدْبَارِهَاۤ اَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّاۤ

47. ऐ अहले किताब! इस (किताब) पर ईमान लाओ जो हमने (अब अपने हबीब मुहम्मद ﷺ पर) उतारी है जो उस किताब की (अस्लन) तस्दीक़ करती है जो तुम्हारे पास है, इससे क़ब्ल कि हम (बा'ज़) चेहरों (के नुक़ूश) को मिटा दें और उन्हें उनकी पुश्त की ह़ालत पर फेर दें या उन पर उसी तरह ला'नत करें जैसे हमने हफ़्ते के दिन

اَصۡحٰبَ السَّبۡتِ ؕ وَ كَانَ اَمۡرُ اللّٰهِ مَفۡعُوۡلًا ﴿۴۷﴾

(नाफ़रमानी करने) वालों पर ला'नत की थी और अल्लाह का हुक्म पूरा हो कर ही रेहता है।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغۡفِرُ اَنۡ يُّشۡرَكَ بِهٖ وَ يَغۡفِرُ مَا دُوۡنَ ذٰلِكَ لِمَنۡ يَّشَآءُ ۚ وَمَنۡ يُّشۡرِكۡ بِاللّٰهِ فَقَدِ افۡتَرٰۤى اِثۡمًا عَظِيۡمًا ﴿۴۸﴾

48. बेशक अल्लाह इस बातको नहीं बख़्शता कि उसके साथ शिर्क किया जाए और उससे कम तर (जो गुनाह भी हो) जिस के लिए चाहता है बख़्श देता है, और जिसने अल्लाह के साथ शिर्क किया उसने वाक़िअ़तन ज़बरदस्त गुनाह का बोह्तान बांधा।

اَلَمۡ تَرَ اِلَى الَّذِيۡنَ يُزَكُّوۡنَ اَنۡفُسَهُمۡ ؕ بَلِ اللّٰهُ يُزَكِّىۡ مَنۡ يَّشَآءُ وَلَا يُظۡلَمُوۡنَ فَتِيۡلًا ﴿۴۹﴾

49. क्या आपने ऐसे लोगों को नहीं देखा जो ख़ुदको पाक ज़ाहिर करते हैं, बल्कि अल्लाह ही जिसे चाहता है पाक फ़रमाता है और उन पर एक धागे के बराबर भी ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।

اُنۡظُرۡ كَيۡفَ يَفۡتَرُوۡنَ عَلَى اللّٰهِ الۡكَذِبَ ؕ وَكَفٰى بِهٖۤ اِثۡمًا مُّبِيۡنًا ﴿۵۰﴾ ع ۸ ۴

50.- आप देखिये वोह अल्लाह पर कैसे झूटा बोह्तान बांधते हैं, और (उनके अ़ज़ाब के लिए येही खुला गुनाह काफ़ी है।

اَلَمۡ تَرَ اِلَى الَّذِيۡنَ اُوۡتُوۡا نَصِيۡبًا مِّنَ الۡكِتٰبِ يُؤۡمِنُوۡنَ بِالۡجِبۡتِ وَالطَّاغُوۡتِ وَيَقُوۡلُوۡنَ لِلَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا هٰۤؤُلَآءِ اَهۡدٰى مِنَ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا سَبِيۡلًا ﴿۵۱﴾

51. क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें (आस्मानी) किताब का हिस्सा दिया गया है (फिर भी) वोह बुतों और शैतान पर ईमान रखते हैं और काफ़िरों के बारे में केहते हैं कि मुसलमानों की निस्बत येह (काफ़िर) ज़ियादा सीधी राह पर हैं।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيۡنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ ؕ وَمَنۡ يَّلۡعَنِ اللّٰهُ فَلَنۡ تَجِدَ لَهٗ نَصِيۡرًا ﴿۵۲﴾

52. येह वोह लोग हैं जिन पर अल्लाह ने ला'नत की, और जिस पर अल्लाह ला'नत करे तो उसके लिए हरगिज़ कोई मददगार न पाएगा।

اَمۡ لَهُمۡ نَصِيۡبٌ مِّنَ الۡمُلۡكِ فَاِذًا لَّا يُؤۡتُوۡنَ النَّاسَ نَقِيۡرًا ﴿۵۳﴾

53. क्या उनका सल्तनत में कुछ हिस्सा है? अगर ऐसा हो तो येह (अपने बुख़्लके बाइस) लोगों को तिल बराबर भी (कोई चीज़) नहीं देंगे।

اَمۡ يَحۡسُدُوۡنَ النَّاسَ عَلٰى مَاۤ

54. क्या येह (यहूद) लोगों (से उन ने'मतों) पर ह़सद

اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَقَدْ اٰتَيْنَآ
اٰلَ اِبْرٰهِيْمَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ
وَاٰتَيْنٰهُمْ مُّلْكًا عَظِيْمًا ﴿٥٤﴾

करते हैं जो अल्लाहने उन्हें अपने फ़ज़्ल से अ़ता फ़रमाई हैं, सो वाक़ई हमने इब्राहीम (عليه السلام) के ख़ानदान को किताब और हिक्मत अ़ता की और हम ने उन्हें बड़ी सल्तनत बख़्शी।

فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ صَدَّ
عَنْهُ ؕ وَكَفٰى بِجَهَنَّمَ سَعِيْرًا ﴿٥٥﴾

55.- पस उनमें से कोई तो उस पर ईमान ले आया और उनमें से किसीने उससे रूगर्दानी की, और (रूगर्दानी करनेवाले के लिए) दोज़ख़ की भड़क़ती आग काफ़ी है।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا سَوْفَ
نُصْلِيْهِمْ نَارًا ؕ كُلَّمَا نَضِجَتْ
جُلُوْدُهُمْ بَدَّلْنٰهُمْ جُلُوْدًا غَيْرَهَا
لِيَذُوْقُوا الْعَذَابَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ
عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿٥٦﴾

56. बेशक जिन लोगोंने हमारी आयतों से कुफ़्र किया हम अ़नक़रीब उन्हें (दोज़ख़ की) आगमें झोंक देंगे जब उनकी खालें जल जाएंगी तो हम उन्हें दूसरी खालें बदल देंगे ताकि वोह (मुसल्सल) अ़ज़ाब (का मज़ा) चखते रहें, बेशक अल्लाह ग़ालिब हिक्मतवाला है।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ لَهُمْ
فِيْهَآ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۫ وَّنُدْخِلُهُمْ
ظِلًّا ظَلِيْلًا ﴿٥٧﴾

57. और जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे तो हम उन्हें बहिश्तों में दाख़िल करेंगे जिन के नीचे नेहरें रवां हैं वोह उन में हमेशा रहेंगे उनके लिए वहां पाकीज़ा बीवियां होंगी और हम उनको बहुत घने साए में दाख़िल करेंगे।

اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا
الْاَمٰنٰتِ اِلٰٓى اَهْلِهَا ۙ وَاِذَا حَكَمْتُمْ
بَيْنَ النَّاسِ اَنْ تَحْكُمُوْا بِالْعَدْلِ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
كَانَ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ﴿٥٨﴾

58. बेशक अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें उन्ही लोगों के सुपुर्द करो जो उनके अहल हैं, और जब तुम लोगों के दरमियान फ़ैसला करो तो अदल के साथ फ़ैसला किया करो, बेशक अल्लाह तुम्हें क्या ही अच्छी नसीह़त फ़रमाता है, बेशक अल्लाह ख़ूब सुननेवाला ख़ूब देखनेवाला है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ

59. ऐ ईमान वालो! अल्लाह की इताअ़त करो और रसूल

اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَ اُولِي الْاَمْرِ
مِنْكُمْ ۚ فَاِنْ تَنَازَعْتُمْ فِيْ شَيْءٍ
فَرُدُّوْهُ اِلَى اللّٰهِ وَالرَّسُوْلِ اِنْ كُنْتُمْ
تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ
ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّ اَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ﴿٥٩﴾ ع ٨ ٩ ٥

(ﷺ) की इताअ़त करो और अपने में से (अहले ह़क़) साहि़बाने अम्र की, फिर अगर किसी मस्अलेमें तुम बाहम इख़्तिलाफ़ करो तो उसे (ह़त्मी फ़ैसले के लिए) अल्लाह और रसूल (ﷺ) की तरफ़ लौटा दो अगर तुम अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान रखते हो, (तो) येही (तुम्हारे ह़क़ में) बेहतर और अंजाम के लिहाज़ से बहुत अच्छा है।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يَزْعُمُوْنَ اَنَّهُمْ
اٰمَنُوْا بِمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَاۤ اُنْزِلَ
مِنْ قَبْلِكَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَحَاكَمُوْۤا
اِلَى الطَّاغُوْتِ وَ قَدْ اُمِرُوْۤا
اَنْ يَّكْفُرُوْا بِهٖ ؕ وَ يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ
اَنْ يُّضِلَّهُمْ ضَلٰلًاۢ بَعِيْدًا ﴿٦٠﴾

60. क्या आपने इन (मुनाफ़िक़ों) को नहीं देखा जो (ज़बान से) दा'वा करते हैं कि वोह इस (किताब या'नी क़ुरआन) पर ईमान लाए जो आपकी तरफ़ उतारा गया और उन (आस्मानी किताबों) पर भी जो आपसे पहले उतारी गईं (मगर) चाहते येह हैं कि अपने मुक़द्दमात (फ़ैसले के लिए) शैतान (या'नी अह्‌कामे इलाही से सरकशी पर मब्नी कानून) की तरफ़ ले जाएं हालांकि उन्हें हुक्म दिया जा चुका है कि इसका (खुला) इन्कार कर दें, और शैतान तो येही चाहता है कि उन्हें दूर दराज़ गुमराही में भटकाता रहे।

وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَاۤ اَنْزَلَ
اللّٰهُ وَ اِلَى الرَّسُوْلِ رَاَيْتَ الْمُنٰفِقِيْنَ
يَصُدُّوْنَ عَنْكَ صُدُوْدًا ۚ ﴿٦١﴾

61. और जब उन से कहा जाता है कि अल्लाह के नाज़िल कर्दह (क़ुरआन) की तरफ़ और रसूल (ﷺ) की तरफ़ आ जाओ तो आप मुनाफ़िक़ों को देखेंगे कि वोह आप (की तरफ़ रुजूअ करने) से गुरेज़ां रेहते हैं।

فَكَيْفَ اِذَاۤ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌۢ
بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ثُمَّ جَآءُوْكَ
يَحْلِفُوْنَ ۖ بِاللّٰهِ اِنْ اَرَدْنَاۤ اِلَّاۤ
اِحْسَانًا وَّ تَوْفِيْقًا ﴿٦٢﴾

62. फिर (उस वक़्त) उनकी ह़ालत क्या होगी जब अपनी कारस्तानियों के बाइस उन पर कोई मुसीबत आन पड़े तो अल्लाह की क़स्में खाते हुए आपकी ख़िदमतमें ह़ाज़िर हों (और येह कहें) कि हमने तो सिर्फ़ भलाई और बाहमी मुवाफ़िक़त का ही इरादह किया था।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يَعْلَمُ اللّٰهُ مَا فِيْ
قُلُوْبِهِمْ ۗ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَ عِظْهُمْ

63. येह वोह (मुनाफ़िक़ और मुफ़्सिद) लोग हैं कि अल्लाह उनके दिलों की हर बात को ख़ूब जानता है, पस

وَقُلْ لَّهُمْ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ قَوْلًا بَلِيْغًا ﴿٦٣﴾

आप उनसे ऐ'राज़ बरतें और उन्हें नसीह़त करते रहें और उनसे उनके बारे में मुअस्सर गुफ़्तगू फ़रमाते रहें।

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا لِيُطَاعَ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿٦٤﴾

64. और हमने कोई पयग़म्बर नहीं भेजा मगर इस लिए कि अल्लाह के हुक्म से उसकी इताअ़त कि जाए और (ऐ ह़बीब!) अगर वोह लोग जब अपनी जानों पर ज़ुल्म कर बैठे थे आपकी ख़िदमत में ह़ाज़िर हो जाते और अल्लाह से मुआ़फ़ी मांगते और रसूल (ﷺ) भी उनके लिए मग़्फ़िरत तलब करते तो वोह (इस वसीले और शफ़ाअ़त की बिना पर) ज़रूर अल्लाह को तौबा क़ुबूल फ़रमानेवाला निहायत महरबान पाते।

فَلَا وَ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿٦٥﴾

65. पस (ऐ ह़बीब!) आपके रबकी क़सम येह लोग मुसलमान नहीं हो सक़्ते यहां तक कि वोह अपने दरमियान वाक़े' होने वाले हर इख़्तिलाफ़ में आपको ह़ाकिम बना लें फिर उस फ़ैसले से जो आप सादिर फ़रमा दें अपने दिलों में कोई तंगी न पाएं और (आपके हुक्म को) बख़ुशी पूरी फ़रमांबरदारी के साथ क़ुबूल कर लें।

وَلَوْ اَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ اَنِ اقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ اَوِ اخْرُجُوْا مِنْ دِيَارِكُمْ مَّا فَعَلُوْهُ اِلَّا قَلِيْلٌ مِّنْهُمْ ؕ وَلَوْ اَنَّهُمْ فَعَلُوْا مَا يُوْعَظُوْنَ بِهٖ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاَشَدَّ تَثْبِيْتًا ۙ﴿٦٦﴾

66. और अगर हम उन पर फ़र्ज़ कर देते कि तुम अपने आपको क़त्ल कर डालो या अपने घरों को छोड़ कर निकल जाओ तो उनमें से बहुत थोड़े लोग उस पर अ़मल करते, और उन्हें जो नसीह़त की जाती है अगर वोह उस पर अ़मल पैरा हो जाते तो येह उनके ह़क़ में बेहतर होता और (ईमान पर) बहुत ज़ियादा साबित क़दम रखनेवाला होता।

وَّاِذًا لَّاٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ لَّدُنَّآ اَجْرًا عَظِيْمًا ۙ﴿٦٧﴾

67. और उस वक़्त हम भी उन्हें अपने हुज़ूर से अ़ज़ीम अज्र अ़ता फ़रमाते।

وَّلَهَدَيْنٰهُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿٦٨﴾

68. और हम उन्हें वाक़िअ़तन सीधी राह पर लगा देते।

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ

69. और जो कोई अल्लाह और रसूल (ﷺ) की

مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ
النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ
وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ
رَفِيْقًا ؕ ﴿٦٩﴾

इताअ़त करे तो येही लोग (रोज़े क़ियामत) उन (हस्तियों) के साथ होंगे जिन पर अल्लाह ने (ख़ास) इन्आ़म फ़रमाया है जो कि अंबिया, सिद्दीक़ीन, शु–हदा और सालिहीन हैं, और येह बहुत अच्छे साथी हैं।

ذٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى
بِاللّٰهِ عَلِيْمًا ﴿٧٠﴾ ع ٩

70. येह फ़ज़्ल (ख़ास) अल्लाह की तरफ़ से है, और अल्लाह जाननेवाला काफ़ी है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا خُذُوْا حِذْرَكُمْ
فَانْفِرُوْا ثُبَاتٍ اَوِ انْفِرُوْا جَمِيْعًا ﴿٧١﴾

71. ऐ ईमानवालो! अपनी हिफ़ाज़त का सामान ले लिया करो फिर (जिहाद के लिए) मुतफ़र्रिक़ जमाअ़तें हो कर निकलो या सब इकठ्ठे हो कर कूच करो।

وَاِنَّ مِنْكُمْ لَمَنْ لَّيُبَطِّئَنَّ ۚ فَاِنْ
اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالَ قَدْ اَنْعَمَ
اللّٰهُ عَلَيَّ اِذْ لَمْ اَكُنْ مَّعَهُمْ
شَهِيْدًا ﴿٧٢﴾

72. और यक़ीनन तुम में से बा'ज़ ऐसे भी हैं जो (अ़मदन सुस्ती करते हुऐ) देर लगाते हैं, फिर अगर (जंग में) तुम्हें कोई मुसीबत पहुंचे तो (शरीक न होनेवाला शख़्स) केहता है कि बेशक अल्लाहने मुझ पर एहसान फ़रमाया कि मैं उनके साथ (मैदाने जंग में) हाज़िर न था।

وَلَئِنْ اَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ اللّٰهِ
لَيَقُوْلَنَّ كَاَنْ لَّمْ تَكُنْ بَيْنَكُمْ وَ
بَيْنَهٗ مَوَدَّةٌ يّٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ مَعَهُمْ
فَاَفُوْزَ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿٧٣﴾

73. और अगर तुम्हें अल्लाहकी जानिबसे कोई ने'मत नसीब हो जाए तो (फिर) येही (मुनाफ़िक़ अफ़्सोस करते हुए) ज़रूर (यूं) कहेगा गोया तुम्हारे और उसके दरमियान कुछ दोस्ती ही न थी कि ऐ काश! मैं उनके साथ होता तो मैं भी बड़ी कामयाबी हा़सिल करता।

فَلْيُقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ
يَشْرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ؕ
وَمَنْ يُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيُقْتَلْ اَوْ
يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٧٤﴾

74. पस उन (मोमिनों)को अल्लाहकी राहमें (दीन की सरबुलंदी के लिए) लड़ना चाहिए जो आख़िरत के इ़वज़ दुन्यवी ज़िन्दगी को बेच देते हैं, और जो कोई अल्लाहकी राह में जंग करे, ख़्वाह वोह (खुद) क़त्ल हो जाए या ग़ालिब आ जाए तो हम (दोनों सूरतों में) अ़नक़रीब उसे अ़ज़ीम अज्र अ़ता फ़रमाएंगे।

وَ مَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ
وَ النِّسَآءِ وَالْوِلْدَانِ الَّذِيْنَ
يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْ هٰذِهِ
الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ اَهْلُهَا ۚ وَاجْعَلْ لَّنَا
مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۚ وَّ اجْعَلْ لَّنَا
مِنْ لَّدُنْكَ نَصِيْرًا ﴿٧٥﴾

75. और (मुसलमानो !) तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह की राह में (मज़्लूमों की आज़ादी के लिए) जंग नहीं करते हालां कि कमजोर, मज़्लूम और मक़्हूर मर्द, औरतें ओर बच्चे (ज़ुल्मो सितम से तंग आ कर अपनी आज़ादी के लिए) पुकारते हैं : ऐ हमारे रब ! हमें उस बस्ती से निकाल ले जहां के (वडेरे) लोग ज़ालिम हैं और किसी को अपनी बारगाह से हमारा कारसाज़ मुक़र्रर फ़रमा दे और किसी को अपनी बारगाह से हमारा मददगार बना दे !

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ ۚ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ
سَبِيْلِ الطَّاغُوْتِ فَقَاتِلُوْٓا اَوْلِيَآءَ
الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّ كَيْدَ الشَّيْطٰنِ كَانَ
ضَعِيْفًا ﴿٧٦﴾ ع

76. जो लोग ईमान लाए वोह अल्लाहकी राह में (नेक मक़ासिद के लिए) जंग करते हैं और जिन्होंने कुफ़्र किया वोह शैतानकी राह में (तागूती मक़ासिद के लिए) जंग करते हैं। पस (ऐ मोमिनो!) तुम शैतान के दोस्तों (या'नी शैतानी मिशनके मददगारों) से लड़ो, बेशक शैतान का दाव कमज़ोर है।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ قِيْلَ لَهُمْ كُفُّوْٓا
اَيْدِيَكُمْ وَ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا
الزَّكٰوةَ ۚ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ
الْقِتَالُ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ
النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللّٰهِ اَوْ اَشَدَّ
خَشْيَةً ۚ وَقَالُوْا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ
عَلَيْنَا الْقِتَالَ ۚ لَوْلَآ اَخَّرْتَنَآ اِلٰٓى
اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۭ قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا
قَلِيْلٌ ۚ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقٰى ۣ

77. क्या आपने उन लोगों का ह़ाल नहीं देखा जिन्हें (इब्तिदाअन कुछ अ़र्से के लिए) येह कहा गया कि अपने हाथ (क़िताल से) रोके रखो और नमाज़ क़ाइम किए रहो और ज़कात देते रहो (तो वोह उस पर ख़ुश थे), फिर जब उन पर जिहाद (या'नी कुफ़्र और ज़ुल्म से टकराना) फ़र्ज़ कर दिया गया तो उनमें से एक गिरोह (मुख़ालिफ़) लोगों से (यूं) डरने लगा जैसे अल्लाह ले डरा जाता है या उससे भी बढ़ कर। और केहने लगे : ऐ हमारे रब ! तूने हम पर (इस क़दर जल्दी) जिहाद क्यों फ़र्ज़ कर दिया? तूने हमें मज़ीद थोड़ी मुद्दत तक मोहलत क्यों न दी? आप (उन्हें) फ़रमा दीजिए कि दुनिया का मफ़ाद बहुत थोड़ा (या'नी मा'मूली शै)है और आख़िरत बहुत अच्छी (ने'मत) है उस के लिए जो परहेज़गार बन जाए, वहां एक

धागेके बराबर भी तुम्हारी ह़क़ तल्फ़ी नहीं की जाएगी।

وَلَا تُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿٧٧﴾

78. (ऐ मौत के डरसे जिहादसे गुरेज़ करने वालो!) तुम जहां कहीं (भी) होगे मौत तुम्हें (वहीं) आ पकड़ेगी ख़्वाह तुम मज़बूत क़िल्अ़ों में (ही) हो, और (उनकी ज़ेहनियत येह है कि) अगर उन्हें कोई भलाई (फ़ायदा) पहुंचे तो केहते हैं कि येह (तो) अल्लाहकी तरफ़ से है (उसमें रसूल ﷺ की बरकत और वास्ते का कोई दख़ल नहीं) और अगर उन्हें कोई बुराई (नुक़्सान) पहुंचे तो केहते हैं : (ऐ रसूल!) येह आपकी तरफ़से (या'नी आपकी वजह से) है। आप फ़रमा दें (ह़क़ीक़तन) सब कुछ अल्लाहकी तरफ़ से (होता) है। पस इस क़ौमको क्या हो गया है कि येह कोई बात समझने के क़रीब ही नहीं आते।

اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يُدْرِكْكُّمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِيْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ ؕ وَاِنْ تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِكَ ؕ قُلْ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ فَمَالِ هٰٓؤُلَآءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ حَدِيْثًا ﴿٧٨﴾

79. (ऐ इन्सान अपनी तरबियत यूं कर के)जब तुझे कोई भलाई पहुंचे तो(समझ के) वोह अल्लाह की तरफ़ से है (उसे अपने हुस्ने तदबीर की तरफ़ मन्सूब न कर) और जब तुझे कोई बुराई पहुंचे तो (समझ के) वोह तेरी अपनी तरफ़ से है (या'नी उसे अपनी ख़राबिए नफ़्स की तरफ़ मन्सूब कर), और (ऐ महबूब!) हमने आपको तमाम इन्सानों के लिए रसूल बना कर भेजा है, और (आपकी रिसालत पर) अल्लाह गवाहीमें काफ़ी है।

مَآ اَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ۘ وَمَآ اَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنْ نَّفْسِكَ ؕ وَاَرْسَلْنٰكَ لِلنَّاسِ رَسُوْلًا ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿٧٩﴾

80. जिसने रसूल (ﷺ)का हुक्म माना, बेशक उसने अल्लाह (ही) का हुक्म माना और जिसने रूगर्दानी की तो हम ने आपको उन पर निगहबान बना कर नहीं भेजा।

مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ وَمَنْ تَوَلّٰى فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ؕ ﴿٨٠﴾

81. और (उन मुनाफ़िक़ों का येह ह़ाल है कि आपके सामने) केहते हैं कि(हम ने आपका हुक्म) मान लिया, फिर वोह आपके पाससे (उठ कर) बाहर जाते हैं तो उनमें से एक गिरोह आपकी कही हुई बात के बर अ़क्स रात को

وَيَقُوْلُوْنَ طَاعَةٌ ۫ فَاِذَا بَرَزُوْا مِنْ عِنْدِكَ بَيَّتَ طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِيْ تَقُوْلُ ؕ وَاللّٰهُ يَكْتُبُ مَا

يُبَيِّتُوْنَ ۚ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ
عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿٨١﴾

राए ज़नी (और साज़िशी मश्वरे) करता है, और अल्लाह (वोह सब कुछ) लिख रहा है जो वोह रात भर मन्सूबे बनाते हैं। पस (ऐ महबूब!) आप उनसे रुख़े अनवर फेर लीजिए, और अल्लाह पर भरोसा रखिए और अल्लाह काफ़ी कारसाज़ है।

اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ ؕ وَلَوْ
كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوْا
فِيْهِ اخْتِلَافًا كَثِيْرًا ﴿٨٢﴾

82. तो क्या वोह क़ुर्आन में ग़ौरो फ़िक्र नहीं करते, और अगर येह (क़ुर्आन) ग़ैरे ख़ुदा की तरफ़से (आया) होता तो येह लोग उस में बहुत सा इख़्तिलाफ़ पाते।

وَاِذَا جَآءَهُمْ اَمْرٌ مِّنَ الْاَمْنِ اَوِ
الْخَوْفِ اَذَاعُوْا بِهٖ ؕ وَلَوْ رَدُّوْهُ
اِلَى الرَّسُوْلِ وَاِلٰٓى اُولِى الْاَمْرِ
مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِيْنَ يَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ
مِنْهُمْ ؕ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ
وَرَحْمَتُهٗ لَاتَّبَعْتُمُ الشَّيْطٰنَ اِلَّا
قَلِيْلًا ﴿٨٣﴾

83. और जब उनके पास कोई ख़बर अम्न या ख़ौफ़की आती है तो वोह उसे फैला देते हैं और अगर वोह (बजाए शोहरत देने के) उसे रसूल (ﷺ)और अपने में से साहिबाने अम्र की तरफ़ लौटा देते तो ज़रूर उनमें से वोह लोग जो (किसी) बात का नतीजा अख़्ज़ कर सक्ते हैं उस (ख़बर की हक़ीक़त) को जान लेते, अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रह़्मत न होती तो यक़ीनन चंद एक के सिवा तुम (सब) शैतान की पैरवी करने लगते।

فَقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ لَا تُكَلَّفُ
اِلَّا نَفْسَكَ وَحَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ
عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّكُفَّ بَاْسَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا ؕ وَاللّٰهُ اَشَدُّ بَاْسًا وَّاَشَدُّ
تَنْكِيْلًا ﴿٨٤﴾

84. पस (ऐ महबूब!) आप अल्लाहकी राह में जिहाद कीजिए आपको अपनी जान के सिवा (किसी और के लिए) ज़िम्मेदार नहीं ठेहराया जाएगा और आप मुसलमानों को (जिहादके लिए) उभारें, अ़जब नहीं कि अल्लाह काफ़िरों का जंगी ज़ोर तोड़ दे, और अल्लाह गिरफ़्त में (भी) बहुत सख़्त है और सज़ा देने में (भी) बहुत सख़्त।

مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَّكُنْ لَّهٗ
نَصِيْبٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً
سَيِّئَةً يَّكُنْ لَّهٗ كِفْلٌ مِّنْهَا ؕ وَكَانَ

85. जो शख़्स कोई नेक सिफ़ारिश करे तो उसके लिए उस (के सवाब)से हिस्सा (मुक़र्रर) है, और जो कोई बुरी सिफ़ारिश करे तो उसके लिए उस (के गुनाह) से हिस्सा (मुक़र्रर) है, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।

اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ مُّقِیْتًا ﴿۸۵﴾

وَ اِذَا حُیِّیْتُمْ بِتَحِیَّةٍ فَحَیُّوْا بِاَحْسَنَ مِنْهَاۤ اَوْ رُدُّوْهَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ حَسِیْبًا ﴿۸۶﴾

اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَیَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى یَوْمِ الْقِیٰمَةِ لَا رَیْبَ فِیْهِ ؕ

وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ حَدِیْثًا ﴿۸۷﴾ ع ۸

فَمَا لَكُمْ فِی الْمُنٰفِقِیْنَ فِئَتَیْنِ وَاللّٰهُ اَرْكَسَهُمْ بِمَا كَسَبُوْا ؕ اَتُرِیْدُوْنَ اَنْ تَهْدُوْا مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ یُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِیْلًا ﴿۸۸﴾

وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ كَمَا كَفَرُوْا فَتَكُوْنُوْنَ سَوَآءً فَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ اَوْلِیَآءَ حَتّٰى یُهَاجِرُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَیْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ ۪ وَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ وَلِیًّا وَّلَا نَصِیْرًا ﴿۸۹﴾ لا

اِلَّا الَّذِیْنَ یَصِلُوْنَ اِلٰى قَوْمٍ بَیْنَكُمْ وَبَیْنَهُمْ مِّیْثَاقٌ اَوْ جَآءُوْكُمْ حَصِرَتْ صُدُوْرُهُمْ اَنْ یُّقَاتِلُوْكُمْ

86. और जब (किसी लफ़्ज़) सलाम के ज़रीए तुम्हारी तकरीम की जाए तो तुम (जवाब में) उससे बेहतर (लफ़्ज़ के साथ) सलाम पेश किया करो या (कम अज़ कम) वोही (अल्फ़ाज़ जवाब में) लौटा दिया करो। बेशक अल्लाह हर चीज़ पर हिसाब लेने वाला है।

87. अल्लाह है (कि) उसके सिवा कोई लाइक़े इबादत नहीं। वोह तुम्हें ज़रूर क़ियामत के दिन जमा' करेगा जिसमें कोई शक नहीं, और अल्लाह से बात में ज़ियादह सच्चा कौन है।

88. पस तुम्हें क्या हो गया है कि मुनाफ़िक़ों के बारे में तुम दो गिरोह हो गए हो हालांकि अल्लाह ने उनके अपने करतूतों के बाइस उन (की अक़्ल और सोच) को औंधा कर दिया है। क्या तुम उस शख़्स को राहे रास्त पर लाना चाहते हो जिसे अल्लाह ने गुमराह ठेहरा दिया है, और (ऐ मुख़ातिब!) जिसे अल्लाह गुमराह ठेहरा दे तो उसके लिए हरगिज़ कोई राहे (हिदायत) नहीं पा सक्ता।

89. वोह (मुनाफ़िक़ तो) येह तमन्ना करते हैं कि तुम भी कुफ़्र करो जैसे उन्होंने कुफ़्र किया ताकि तुम सब बराबर हो जाओ। सो तुम उनमें से (किसी को दोस्त न बनाओ यहां तक कि वोह अल्लाह की राह में हिजरत (करके अपना ईमान और इख़्लास साबित), करें फ़िर अगर वोह रूगर्दानी करें तो उन्हें पकड़ लो और जहां भी पाओ उन्हें क़त्ल कर डालो और उनमें से (किसी को) दोस्त न बनाओ और न मददगार।

90. मगर उन लोगों को (क़त्ल न करो) जो ऐसी कौम से जा मिले हों कि तुम्हारे और उनके दरमियान मुआहिदए (अमान हो चुका) हो या वोह (हौसला हार कर) तुम्हारे पास इस हाल में आ जाएं कि उनके सीने (इस बात से) तंग आ चुके हों कि वोह तुमसे लड़ें या अपनी क़ौम से

اَوْ يُقَاتِلُوْا قَوْمَهُمْ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ
لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقٰتَلُوْكُمْ ۚ فَاِنِ
اعْتَزَلُوْكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ وَاَلْقَوْا
اِلَيْكُمُ السَّلَمَ ۙ فَمَا جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ
عَلَيْهِمْ سَبِيْلًا ﴿٩٠﴾

लड़ें, और अगर अल्लाह चाहता तो (उनके दिलों को हिम्मत देते हुए) यक़ीनन उन्हें तुम पर ग़ालिब कर देता तो वोह तुमसे ज़रूर लड़ते, पस अगर वोह तुमसे कनारा कशी कर लें और तुम्हारे साथ जंग न करें और तुम्हारी तरफ़ सुलह् (का पयग़ाम) भेजें तो अल्लाहने तुम्हारे लिए (भी सुलह जूई की सूरत में) उन पर (दस्त दराज़ी की) कोई राह नहीं बनाई।

سَتَجِدُوْنَ اٰخَرِيْنَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ
يَّاْمَنُوْكُمْ وَيَاْمَنُوْا قَوْمَهُمْ ؕ كُلَّمَا
رُدُّوْۤا اِلَى الْفِتْنَةِ اُرْكِسُوْا فِيْهَا ۚ
فَاِنْ لَّمْ يَعْتَزِلُوْكُمْ وَيُلْقُوْۤا اِلَيْكُمُ
السَّلَمَ وَيَكُفُّوْۤا اَيْدِيَهُمْ فَخُذُوْهُمْ
وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ ؕ وَ
اُولٰٓئِكُمْ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا
مُّبِيْنًا ﴿٩١﴾ ع

91. अब तुम कुछ दूसरे लोगों को भी पाओगे जो चाहते हैं कि(मुनाफ़िक़ाना तरीक़े से ईमान ज़ाहिर करके) तुमसे (भी) अम्न में रहें और (पोशीदह तरीक़ेसे कुफ़्रकी मुवाफ़िक़त कर के) अपनी क़ौम से (भी) अम्न में रहें, (मगर उनकी हालत येह है कि) जब भी (मुसलमानों के ख़िलाफ़) फ़ित्ना अंगेज़ी की तरफ़ फेरे जाते हैं तो वोह उस में (औंधे) कूद पड़ते हैं, सो अगर येह (लोग) तुम से (लड़ने से) कनाराकश न हों और (न ही) तुम्हारी तरह सुलह् (का पयग़ाम) भेजें और (न ही) अपने हाथ (फ़ित्ना अंगेज़ी से) रोकें तो तुम उन्हें पकड़ (कर क़ैद कर) लो और उन्हें क़त्ल कर डालो जहां कहीं भी उन्हें पाओ, और येह वोह लोग हैं जिन पर हमने तुम्हें खुला इख़्तियार दिया है।

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ اَنْ يَّقْتُلَ مُؤْمِنًا
اِلَّا خَطَـًٔا ۚ وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَـًٔا
فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَّدِيَةٌ
مُّسَلَّمَةٌ اِلٰۤى اَهْلِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ
يَّصَّدَّقُوْا ؕ فَاِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ
عَدُوٍّ لَّكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيْرُ

92. और किसी मुसलमान के लिए (जाइज़्) नहीं कि वोह किसी मुसलमान को क़त्ल कर दे मगर (बिग़ैर क़स्द) ग़लती से, और जिसने किसी मुसलमान को ना दानिस्ता क़त्ल कर दिया तो (उस पर) एक मुसलमान गुलाम / बांदी का आज़ाद करना और खून बहा (का अदा करना) जो मक़्तूल के घरवालों के सुपुर्द किया जाए (लाज़िम है) मगर येह कि वोह मुआफ़ कर दें, फिर अगर वोह (मक़्तूल) तुम्हारी दुश्मन क़ौम से हो और वोह मो'मिन (भी) हो तो (सिर्फ़) एक गुलाम/बांदी का आज़ाद करना (ही लाज़िम) है, और अगर वोह (मक़्तूल)

رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ؕ وَ اِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ
بَيْنَكُمْ وَ بَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ فَدِيَةٌ
مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهْلِهٖ وَ تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ
مُّؤْمِنَةٍ ۚ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ
شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ ۙ تَوْبَةً مِّنَ
اللّٰهِ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۹۲﴾
وَ مَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا
فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خٰلِدًا فِيْهَا وَ
غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ لَعَنَهٗ وَ اَعَدَّ لَهٗ
عَذَابًا عَظِيْمًا ﴿۹۳﴾
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا ضَرَبْتُمْ
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَتَبَيَّنُوْا وَ لَا
تَقُوْلُوْا لِمَنْ اَلْقٰٓى اِلَيْكُمُ السَّلٰمَ
لَسْتَ مُؤْمِنًا ۚ تَبْتَغُوْنَ عَرَضَ
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۡ فَعِنْدَ اللّٰهِ مَغَانِمُ
كَثِيْرَةٌ ؕ كَذٰلِكَ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلُ
فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوْا ؕ اِنَّ
اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿۹۴﴾
لَا يَسْتَوِي الْقٰعِدُوْنَ مِنَ
الْمُؤْمِنِيْنَ غَيْرُ اُولِي الضَّرَرِ وَ
الْمُجٰهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ

उस कौम में से हो कि तुम्हारे और उनके दरमियान (सुलह का) मुआ़हिदा है तो ख़ून बहा (भी) जो उसके घरवालों के सुपुर्द किया जाए और एक मुसलमान ग़ुलाम /बांदी का आज़ाद करना (भी लाज़िम) हैं। फिर जिस शख़्स को (ग़ुलाम/बांदी)मुयस्सर न हो तो (उस पर) पै दर पै दो महीने के रोज़े (लाज़िम) हैं। अल्लाह की तरफ़से (येह उसकी) तौबा है, और अल्लाह ख़ूब जाननेवाला बड़ी हि़क्मतवाला है।

93. और जो शख़्स किसी मुसलमान को क़स्दन क़त्ल करे तो उसकी सज़ा दोज़ख़ है कि मुद्दतों उसमें रहेगा और उस पर अल्लाह ग़ज़बनाक होगा और उस पर ला'नत करेगा और उसने उसके लिए ज़बरदस्त अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।

94 ऐ ईमानवालो! जब तुम अल्लाह की राह में (जिहाद के लिए) सफ़र पर निकलो तो तह़क़ीक कर लिया करो और उसको जो तुम्हें सलाम करे येह न कहो कि तू मुसलमान नहीं है, तुम (एक मुसलमान को काफ़िर केह कर मारने के बाद माले ग़नीमत की सूरत में) दुन्यवी ज़िन्दगी का सामान तलाश करते हो तो (यक़ीन करो) अल्लाह के पास बहुत अमवाले गनीमत हैं। इस से पेशतर तुम (भी) तो ऐसे ही थे फिर अल्लाहने तुम पर एहसान किया (और तुम मुसलमान हो गए) पस (दूसरों के बारे में भी) तह़क़ीक कर लिया करो । बेशक अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़बरदार है।

95. मुसलमानों में से वोह लोग जो (जिहाद से जी चुरा कर) बिग़ैर किसी (उ़ज़्र) तक्लीफ़ के (घरों में) बैठ रहनेवाले हैं और वोह लोग जो अल्लाह की राह में अपने मालों और अपनी जानों से जिहाद करने वाले हैं (येह दोनों दरजा व सवाब में) बराबर नहीं हो सक्ते। अल्लाहने

وَاَنْفُسِهِمْ ؕ فَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ
بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ
دَرَجَةً ؕ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ؕ
وَفَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ عَلَى
الْقٰعِدِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا ۙ﴿۹۵﴾

अपने मालों और अपनी जानों से जिहाद करनेवालों को बैठ रहनेवालों पर मरतबे में फ़ज़ीलत बख़्शी है और अल्लाहने सब (ईमानवालों) से वा'दा (तो) भलाई का (ही) फ़रमाया है, और अल्लाहने जिहाद करनेवालों को (बहर तौर) बैठ रहनेवालों पर ज़बरदस्त अज्र (व सवाब) की फ़ज़ीलत दी है।

دَرَجٰتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَّرَحْمَةً ؕ
وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۹۶﴾ ع ۱۳ ۵ ۱۰

96. उसकी तरफ़ से (उनके लिए बहुत) दरजात हैं और बख़्शाइश और रहमत है, और अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला महरबान है।

اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ
اَنْفُسِهِمْ قَالُوْا فِيْمَ كُنْتُمْ ؕ قَالُوْا
كُنَّا مُسْتَضْعَفِيْنَ فِى الْاَرْضِ ؕ
قَالُوْٓا اَلَمْ تَكُنْ اَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةً
فَتُهَاجِرُوْا فِيْهَا ؕ فَاُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ
جَهَنَّمُ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ۙ﴿۹۷﴾

97. बेशक जिन लोगों की रूह फ़रिश्ते इस ह़ाल में क़ब्ज़ करते हैं कि वोह (इस्लाम दुश्मन माह़ौल में रेह कर) अपनी जानों पर ज़ुल्म करनेवाले हैं (तो) वोह उनसे दरयाफ़्त करते हैं कि तुम किस ह़ाल में थे (तुमने इक़ामते दीन की जद्दो जहद की न सर ज़मीने कुफ़्रको छोड़ा)? वोह (मा'ज़ेरतन) केहते हैं कि हम ज़मीन में कमज़ोरो बेबस थे, फ़रिश्ते (जवाबन) केहते हैं क्या अल्लाह की ज़मीन फ़राख न थी कि तुम उसमें (कहीं) हिजरत कर जाते, सो येही वोह लोग हैं जिनका ठिकाना जहन्नम है, और वोह बहुत ही बुरा ठिकाना है।

اِلَّا الْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ
وَالنِّسَآءِ وَالْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ
حِيْلَةً وَّلَا يَهْتَدُوْنَ سَبِيْلًا ۙ﴿۹۸﴾

98. सिवाए उन वाक़ई मजबूरो बेबस मर्दों और औ़रतों और बच्चों के, जो न किसी तदबीर पर क़ुदरत रखते हैं और न (वहां से निकलने का) कोई रास्ता जानते हैं।

فَاُولٰٓئِكَ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّعْفُوَ
عَنْهُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَفُوًّا غَفُوْرًا ﴿۹۹﴾

99. सो येह वोह लोग हैं कि यक़ीनन अल्लाह उन से दरगुज़र फ़रमाएगा, और अल्लाह बड़ा मुआ़फ़ फ़रमानेवाला बख़्शनेवाला है।

وَمَنْ يُّهَاجِرْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يَجِدْ
فِى الْاَرْضِ مُرٰغَمًا كَثِيْرًا وَّسَعَةً ؕ

100. और जो कोई अल्लाह की राह में घरबार छोड़ कर निकले वोह ज़मीन में (हिजरत के लिए) बहुत सी जगहें

وَمَنْ يَّخْرُجْ مِنْ بَيْتِهٖ مُهَاجِرًا اِلَى
اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ
فَقَدْ وَقَعَ اَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَانَ
اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۰۰﴾ ع ١٤

और (मआ़श के लिए) कशाइश पाएगा, और जो शख़्स भी अपने घर से अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की तरफ़ हिजरत करते हुए निकले फिर उसे (रास्ते में ही) मौत आ पकड़े तो उसका अज्र अल्लाह के ज़िम्मे साबित हो गया, और अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला महरबान है।

وَاِذَا ضَرَبْتُمْ فِى الْاَرْضِ فَلَيْسَ
عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَقْصُرُوْا مِنَ
الصَّلٰوةِ ۖ اِنْ خِفْتُمْ اَنْ يَّفْتِنَكُمُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ اِنَّ الْكٰفِرِيْنَ كَانُوْا
لَكُمْ عَدُوًّا مُّبِيْنًا ﴿۱۰۱﴾

101. और जब तुम ज़मीन में सफ़र करो तो तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम नमाज़ में कसर करो (या'नी चार रकअ़त फ़र्ज़ की जगह दो पढ़ो) अगर तुम्हें अंदेशा है कि काफ़िर तुम्हें तक्लीफ़ में मुब्तिला कर देंगे । बेशक कुफ़्फ़ार तुम्हारे खुले दुश्मन हैं।

وَاِذَا كُنْتَ فِيْهِمْ فَاَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلٰوةَ
فَلْتَقُمْ طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ مَّعَكَ
وَلْيَاْخُذُوْۤا اَسْلِحَتَهُمْ ۫ فَاِذَا
سَجَدُوْا فَلْيَكُوْنُوْا مِنْ وَّرَآئِكُمْ ۠
وَلْتَاْتِ طَآئِفَةٌ اُخْرٰى لَمْ يُصَلُّوْا
فَلْيُصَلُّوْا مَعَكَ وَلْيَاْخُذُوْا
حِذْرَهُمْ وَاَسْلِحَتَهُمْ ۚ وَدَّ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا لَوْ تَغْفُلُوْنَ عَنْ اَسْلِحَتِكُمْ وَ
اَمْتِعَتِكُمْ فَيَمِيْلُوْنَ عَلَيْكُمْ مَّيْلَةً
وَّاحِدَةً ؕ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ كَانَ
بِكُمْ اَذًى مِّنْ مَّطَرٍ اَوْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى

102. और (ऐ महबूब!) जब आप उन (मुजाहिदों) में (तशरीफ़ फ़रमा) हों तो उनके लिए नमाज़ (की जमाअ़त) क़ाइम करें पस उनमें से एक जमाअ़त को (पहले) आपके साथ इक़्तिदाअन) खड़ा होना चाहिए और उन्हें अपने हथियार भी लिए रहना चाहिएं, फिर जब वोह सजदह कर चुकें तो (हट कर) तुम लोगों के पीछे हो जाएं और (अब) दूसरी जमाअ़त को जिन्हों ने (अभी) नमाज़ नहीं पढ़ी आ जाना चाहिए फिर वोह आपके साथ (मुक़्तदी बन कर) नमाज़ पढ़ें और चाहिए कि वोह (भी बदस्तूर) अपने अस्बाबे हि़फ़ाज़त और अपने हथियार लिए रहें, काफ़िर चाहते हैं कि कहीं तुम अपने हथियारों और अपने अस्बाब से ग़ाफ़िल हो जाओ तो वोह तुम पर दफ़्अ़तन ह़मला कर दें, और तुम पर कुछ मुज़ाइक़ा नहीं कि अगर तुम्हें बारिश की वजह से कोई तक्लीफ़ हो या बीमार हो तो अपने हथियार (उतार कर) रख दो, और अपना सामाने हि़फ़ाज़त लिए रहो । बेशक अल्लाहने

काफ़िरों के लिए ज़िल्लत अंगेज़ अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।

اَنْ تَضَعُوْٓا اَسْلِحَتَكُمْ ۚ وَخُذُوْا حِذْرَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿۱۰۲﴾

103. फिर (ऐ मुसलमानो !) जब तुम नमाज़ अदा कर चुको तो अल्लाह को खड़े और बैठे और अपने पहलुओं पर (लेटे हर ह़ालमें) याद करते रहो, फिर जब तुम (ह़ालते ख़ौफ़से निकल कर) इत्मीनान पा लो तो नमाज़ को (ह़स्बे दस्तूर) क़ाइम करो। बेशक नमाज़ मो'मिनों पर मुक़र्ररह वक़्त के ह़िसाबसे फ़र्ज़ है।

فَاِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِكُمْ ۚ فَاِذَا اطْمَاْنَنْتُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ۚ اِنَّ الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ كِتٰبًا مَّوْقُوْتًا ﴿۱۰۳﴾

104. और तुम (दुश्मन) क़ौम की तलाश में सुस्ती न करो। अगर तुम्हें (पीछा करने में) तक्लीफ़ पहुंचती है तो उन्हें भी (तो ऐसी ही) तक्लीफ़ पहुंचती है जैसी तक्लीफ़ तुम्हें पहुंच रही है हालां कि तुम अल्लाह से (अज्रो सवाब की) वोह उम्मीदें रखते हो जो उम्मीदें वोह नहीं रखते। और अल्लाह ख़ूब जानने वाला बड़ी ह़िक्मतवाला है।

وَلَا تَهِنُوْا فِي ابْتِغَآءِ الْقَوْمِ ؕ اِنْ تَكُوْنُوْا تَاْلَمُوْنَ فَاِنَّهُمْ يَاْلَمُوْنَ كَمَا تَاْلَمُوْنَ ۚ وَتَرْجُوْنَ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا يَرْجُوْنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۱۰۴﴾ ع ۱۵ ۴ ۱۲

105. (ऐ रसूले गिरामी!) बेशक हमने आप की तरफ़ ह़क़ पर मब्नी किताब नाज़िल की है ताकि आप लोगों में उस (ह़क़) के मुताबिक़ फ़ैसला फ़रमाएं जो अल्लाहने आप को दिखाया है, और आप (कभी) बद दयानत लोगों की तरफ़दारी में बहस करनेवाले न बनें।

اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ بِمَآ اَرٰىكَ اللّٰهُ ؕ وَلَا تَكُنْ لِّلْخَآئِنِيْنَ خَصِيْمًا ﴿۱۰۵﴾

106. और आप अल्लाहसे बख़्शिश तलब करें, बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला महरबान है।

وَّاسْتَغْفِرِ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۚ ﴿۱۰۶﴾

107. और आप ऐसे लोगों की तरफ़से (दिफ़ाअ़न) न

وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِيْنَ

يَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ خَوَّانًا اَثِيْمًا ﴿۱۰۷﴾

झगड़ें जो अपनी ही जानों से धोका कर रहे हैं। बेशक अल्लाह किसी (ऐसे शख़्स) को पसंद नहीं फ़रमाता जो बड़ा बद दयानत और बदकार है।

يَّسْتَخْفُوْنَ مِنَ النَّاسِ وَ لَا يَسْتَخْفُوْنَ مِنَ اللّٰهِ وَهُوَ مَعَهُمْ اِذْ يُبَيِّتُوْنَ مَا لَا يَرْضٰى مِنَ الْقَوْلِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطًا ﴿۱۰۸﴾

108. वोह लोगों से (शरमाते हुए अपनी दग़ाबाज़ी को) छुपाते हैं और अल्लाह से नहीं शरमाते दर आं ह़ालीकि वोह उनके साथ होता है जब वोह रात को (किसी) ऐसी बात से मुतअ़ल्लिक़ (छुप कर) मश्वरह करते हैं जिसे अल्लाह ना पसंद फ़रमाता है, और अल्लाह जो कुछ वोह करते हैं (उसे) अह़ाता किए हुए है।

هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ جٰدَلْتُمْ عَنْهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۫ فَمَنْ يُّجَادِلُ اللّٰهَ عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَمْ مَّنْ يَّكُوْنُ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ﴿۱۰۹﴾

109. ख़बरदार! तुम वोह लोग हो जो दुनिया की ज़िन्दगी में उनकी तरफ़से झगड़े। फिर कौन ऐसा शख़्स है जो क़ियामत के दिन (भी) उनकी तरफ़ से अल्लाह के साथ झगड़ेगा या कौन है जो (उस दिन भी) उन पर वकील होगा?

وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۱۰﴾

110. और जो कोई बुरा काम करे या अपनी जान पर ज़ुल्म करे फिर अल्लाह से बख़्शिश तलब करे वोह अल्लाह को बड़ा बख़्शने वाला निहायत महरबान पाएगा।

وَمَنْ يَّكْسِبْ اِثْمًا فَاِنَّمَا يَكْسِبُهٗ عَلٰى نَفْسِهٖ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۱۱۱﴾

111. और जो शख़्स कोई गुनाह करे तो बस वोह अपनी ही जान पर (उसका वबाल आइद) कर रहा है, और अल्लाह ख़ूब जाननेवाला बड़ी ह़िक्मतवाला है।

وَمَنْ يَّكْسِبْ خَطِيْٓـَٔةً اَوْ اِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهٖ بَرِيْٓـًٔا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿۱۱۲﴾ ع ۱۲ ۸ ۱۳

112. और जो शख़्स किसी ख़ता या गुनाह का इर्तिकाब करे फिर उसकी तोह्मत किसी बे गुनाह पर लगा दे तो उसने यक़ीनन एक बोह्तान और खुले गुनाह (के बोझ) को उठा लिया।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهٗ

113. और (ऐ ह़बीब!) अगर आप पर अल्लाह का फ़ज़्ल

لَهَمَّتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ اَنْ يُّضِلُّوْكَ ؕ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّاۤ اَنْفُسَهُمْ وَ مَا يَضُرُّوْنَكَ مِنْ شَیْءٍ ؕ وَاَنْزَلَ اللّٰهُ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ؕ وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ﴿۱۱۳﴾

और उसकी रह़मत न होती तो उन (दग़ाबाजों) में से एक गिरोह येह इरादा कर चुका था कि आप को बेहका दें, जब कि वोह मह़ज़ अपने आप को ही गुमराह कर रहे हैं और आप का तो कुछ बिगाड़ ही नहीं सक्ते, और अल्लाह ने आप पर किताब और ह़िक्मत नाज़िल फ़रमाई है और उसने आप को वोह सब इल्म अ़ता कर दिया है जो आप नहीं जानते थे, और आप पर अल्लाह का बहुत बड़ा फ़ज़्ल है।

لَا خَيْرَ فِیْ كَثِيْرٍ مِّنْ نَّجْوٰىهُمْ اِلَّا مَنْ اَمَرَ بِصَدَقَةٍ اَوْ مَعْرُوْفٍ اَوْ اِصْلَاحٍۭ بَيْنَ النَّاسِ ؕ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۱۱۴﴾

114. उनके अक्सर खुफ़्या मश्वरों में कोई भलाई नहीं सिवाए उस शख़्स (के मश्वरे) के जो किसी ख़ैरात का या नेक काम का या लोगों में सुल्ह कराने का हुक्म देता है, और जो कोई येह काम अल्लाह की रज़ा जूई के लिए करे तो हम उसको अ़नक़रीब अ़ज़ीम अज्र अ़ता करेंगे।

وَمَنْ يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ نُوَلِّهٖ مَا تَوَلّٰى وَنُصْلِهٖ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿۱۱۵﴾ ع

115. और जो शख़्स रसूल (ﷺ) की मुख़ालिफ़त करे इसके बाद कि उस पर हिदायत की राह वाज़ेह हो चुकी और मुसलमानों की राह से जुदा राह की पैरवी करे तो हम उसे उसी (गुमराही) की तरफ़ फेरे रखेंगे जिधर वोह (ख़ुद) फिर गया है और (बिल आख़िर) उसे दोज़ख़ में डालेंगे, और वोह बहुत ही बुरा ठिकाना है।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَ يَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ﴿۱۱۶﴾

116. बेशक अल्लाह इस (बात) को मुआ़फ नहीं करता कि उसके साथ किसी को शरीक ठेहराया जाए और जो (गुनाह) इससे नीचे है जिसके लिए चाहे मुआ़फ़ फ़रमा देता है, और जो कोई अल्लाह के साथ शिर्क करे वोह वाक़ई दूर की गुमराही में भटक गया।

اِنْ يَّدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلَّاۤ اِنٰثًا ۚ وَ

117. येह (मुशरिकीन) अल्लाह के सिवा मह़ज़ ज़नानी

إِنْ يَّدْعُوْنَ إِلَّا شَيْطٰنًا مَّرِيْدًا ﴿١١٧﴾

चीज़ों ही की परस्तिश करते हैं और येह फ़क़त सरकश शैतान ही की पूजा करते हैं।

لَّعَنَهُ اللّٰهُ ۘ وَقَالَ لَأَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ﴿١١٨﴾

118. जिस पर अल्लाहने ला'नत की है, और जिसने कहा था कि मैं तेरे बंदों में से एक मुअ़य्यन हिस्सा (अपने लिए) ज़रूर ले लूंगा।

وَّلَأُضِلَّنَّهُمْ وَلَأُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَآٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ اٰذَانَ الْأَنْعَامِ وَلَآٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللّٰهِ ۭ وَمَنْ يَّتَّخِذِ الشَّيْطٰنَ وَلِيًّا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِيْنًا ﴿١١٩﴾ ۭ

119. मैं उन्हें ज़रूर गुमराह कर दूंगा और ज़रूर उन्हें ग़लत उम्मीदें दिलाऊंगा और उन्हें ज़रूर हुक्म देता रहूंगा सो वोह यक़ीनन जानवरों के कान चीरा करेंगे और मैं उन्हें ज़रूर हुक्म देता रहूंगा सो वोह यक़ीनन अल्लाह की बनाई हुई चीज़ों को बदला करेंगे, और जो कोई अल्लाह को छोड़ कर शैतान को दोस्त बना ले तो वाक़ई वोह सरीह़ नुक़्सान में रहा।

يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيْهِمْ ۭ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ إِلَّا غُرُوْرًا ﴿١٢٠﴾

120. शैतान उन्हें (ग़लत) वा'दे देता है और उन्हें (झूटी) उम्मीदें दिलाता है और शैतान फ़रेब के सिवा उनसे कोई वा'दा नहीं करता।

أُولٰٓئِكَ مَأْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَلَا يَجِدُوْنَ عَنْهَا مَحِيْصًا ﴿١٢١﴾

121. येह वोह लोग हैं जिनका ठिकाना दोज़ख़ है और वोह वहां से भागने की कोई जगह न पाएंगे।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ أَبَدًا ۭ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ۭ وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيْلًا ﴿١٢٢﴾

122. और जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे हम उन्हें अ़नक़रीब बहिश्तों में दाख़िल करेंगे जिनके नीचे नेहरें बेह रही होंगी वोह उनमें हमेशा हमेशा रहेंगे। (येह) अल्लाह का सच्चा वा'दा है, और अल्लाह से ज़ियादह बात का सच्चा कौन हो सक्ता है?

لَيْسَ بِأَمَانِيِّكُمْ وَلَآ أَمَانِيِّ أَهْلِ الْكِتٰبِ ۭ مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا يُّجْزَ

123. (अल्लाह का वा'दए मग़फ़िरत) न तुम्हारी ख़्वाहिशात पर, मौक़ूफ़ है और न अहले किताब की

بِهٖ ۙ وَ لَا يَجِدْ لَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّ لَا نَصِيْرًا ﴿۱۲۳﴾

ख़्वाहिशात पर, जो कोई बुरा अ़मल करेगा उसे उसकी सज़ा दी जाएगी और न वोह अल्लाह के सिवा अपना कोई ह़िमायती पाएगा और न मददगार।

وَ مَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ مِنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَ هُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَ لَا يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا ﴿۱۲۴﴾

124. और जो कोई नेक आ'माल करेगा (ख़्वाह) मर्द हो या औ़रत दर आं ह़ाली कि वोह मो'मिन है पस वोही लोग जन्नत में दाख़िल होंगे और उनकी तिल बराबर (भी) ह़क़तल्फ़ी नहीं की जाएगी।

وَ مَنْ اَحْسَنُ دِيْنًا مِّمَّنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَ هُوَ مُحْسِنٌ وَّ اتَّبَعَ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَ اتَّخَذَ اللّٰهُ اِبْرٰهِيْمَ خَلِيْلًا ﴿۱۲۵﴾

125. और दीन इख़्तियार करने के ए'तिबार से उस शख़्स से बेहतर कौन हो सक्ता है जिसने अपना रूए नियाज़ अल्लाह के लिए झुका दिया और वोह साह़िबे एह़सान भी हुवा, और वोह दीने इब्राहीम (علیہ السلام) की पैरवी करता रहा जो (अल्लाह के लिए) यकसू (और) रास्त रव थे, और अल्लाह ने इब्राहीम (علیہ السلام)को अपना मुख़्लस दोस्त बना लिया था (सो वोह शख़्स भी ह़ज़रत इब्राहीम علیہ السلام की निस्बत से अल्लाह का दोस्त हो गया)।

وَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطًا ﴿۱۲۶﴾ ع ۱۸ ۱۱ ۱۵

126. और (सब) अल्लाह ही का है जो कुछ आस्मानों में और जो कुछ ज़मीन में है, और अल्लाह हर चीज़ का अह़ाता फ़रमाए हुए है।

وَ يَسْتَفْتُوْنَكَ فِي النِّسَآءِ ؕ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِيْهِنَّ ۙ وَمَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ فِيْ يَتٰمَى النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا تُؤْتُوْنَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَ تَرْغَبُوْنَ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الْوِلْدَانِ ۙ وَ

127. और (ऐ पयग़म्बर!) लोग आपसे (यतीम) औरतों के बारे में फ़त्वा पूछते हैं। आप फ़रमा दें कि अल्लाह तुम्हें उनके बारे में ह़ुक्म देता है और जो ह़ुक्म तुमको (पहले से) किताबे मजीद में सुनाया जा रहा है (वोह भी) उन यतीम औरतों ही के बारे में है जिन्हें तुम वोह (ह़ुक़ूक) नहीं देते जो उनके लिए मुक़र्रर किए गए हैं और चाहते हो कि (उनका माल क़ब्ज़े में लेने की ख़ातिर) उनके साथ ख़ुद निकाह कर लो और नीज़ बेबस बच्चों के बारे में (भी

اَنْ تَقُوْمُوْا لِلْيَتٰمٰى بِالْقِسْطِ ؕ وَ مَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِهٖ عَلِيْمًا ﴿۱۲۷﴾

हुक्म) है कि यतीमों के मुआ़मले में इन्साफ़ पर क़ाइम रहा करो, और तुम जो भलाई भी करोगे तो बेशक अल्लाह उसे ख़ूब जाननेवाला है।

وَ اِنِ امْرَاَةٌ خَافَتْ مِنْۢ بَعْلِهَا نُشُوْزًا اَوْ اِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَاۤ اَنْ يُّصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا ؕ وَ الصُّلْحُ خَيْرٌ ؕ وَ اُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ الشُّحَّ ؕ وَ اِنْ تُحْسِنُوْا وَ تَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿۱۲۸﴾

128. और अगर कोई औ़रत अपने शौहर की जानिब से ज़ियादती या बे रग़बती का ख़ौफ़ रखती हो तो दोनों (मियां-बीवी) पर कोई ह़र्ज नहीं कि वोह आपस में किसी मुनासिब बात पर सुलह कर लें, और सुलह (ह़क़ीक़त में) अच्छी चीज़ है और तबीअ़तों में (थोड़ा बहुत) बुख़्ल (ज़रूर) रख दिया गया है, और अगर तुम एह़सान करो और परहेज़गारी इख़्तियार करो तो बेशक अल्लाह उन कामों से जो तुम कर रहे हो (अच्छी तरह) ख़बरदार है।

وَ لَنْ تَسْتَطِيْعُوْۤا اَنْ تَعْدِلُوْا بَيْنَ النِّسَآءِ وَ لَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيْلُوْا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوْهَا كَالْمُعَلَّقَةِ ؕ وَ اِنْ تُصْلِحُوْا وَ تَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۲۹﴾

129. और तुम हरगिज़ उस बातकी ताक़त नहीं रखते कि (एक से ज़ाइद) बीवियों के दरमियान (पूरा पूरा) अ़द्ल कर सको अगरचे तुम कितना भी चाहो। पस (एक की तरफ़) पूरे मैलाने तबा' के साथ (यूं) न झुक जाओ कि दूसरी को (दरमियान में) लटकती हुई चीज़ की तरह छोड़ दो। और अगर तुम इस्लाह़ कर लो और (ह़क़ तल्फ़ी व ज़ियादती से) बचते रहो तो अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

وَ اِنْ يَّتَفَرَّقَا يُغْنِ اللّٰهُ كُلًّا مِّنْ سَعَتِهٖ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ وَاسِعًا حَكِيْمًا ﴿۱۳۰﴾

130. और अगर दोनों (मियां बीवी) जुदा हो जाएं तो अल्लाह हर एक को अपनी कशाइश से (एक दूसरे से) बेनियाज़ कर देगा और अल्लाह बड़ी वुस्अ़तवाला बड़ी ह़िक्मतवाला है।

وَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَ لَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَ اِيَّاكُمْ اَنِ

131. और अल्लाह ही का है जो कुछ आस्मानों में और जो कुछ ज़मीन में है। और बेशक हमने उन लोगों को (भी) जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई हुक्म दिया है और तुम्हें (भी) कि अल्लाह से डरते रहा करो। और अगर तुम ना

اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَاِنۡ تَكۡفُرُوۡا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا
فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الۡاَرۡضِ ؕ وَكَانَ
اللّٰهُ غَنِيًّا حَمِيۡدًا ﴿۱۳۱﴾

फ़रमानी करोगे तो बेशक (सब कुछ) अल्लाह ही का है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है, और अल्लाह बेनियाज़, सुतूदह सिफ़ात है।

وَلِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِى
الۡاَرۡضِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيۡلًا ﴿۱۳۲﴾

132. और अल्लाह ही का है जो आस्मानों में है और जो ज़मीन में है, और अल्लाह का कारसाज़ होना काफ़ी है।

اِنۡ يَّشَاۡ يُذۡهِبۡكُمۡ اَيُّهَا النَّاسُ
وَيَاۡتِ بِاٰخَرِيۡنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى
ذٰلِكَ قَدِيۡرًا ﴿۱۳۳﴾

133. ऐ लोगो! अगर वोह चाहे तो तुम्हें नाबूद कर दे और (तुम्हारी जगह) दूसरों को ले आए, और अल्लाह इस पर बड़ी क़ुदरतवाला है।

مَنۡ كَانَ يُرِيۡدُ ثَوَابَ الدُّنۡيَا فَعِنۡدَ
اللّٰهِ ثَوَابُ الدُّنۡيَا وَالۡاٰخِرَةِ ؕ وَ
كَانَ اللّٰهُ سَمِيۡعًا بَصِيۡرًا ﴿۱۳۴﴾ ع ۱۹ ۸ ۱۲

134. जो कोई दुनिया का इन्आ़म चाहता है तो अल्लाह के पास दुनिया व आख़िरत (दोनों) का इन्आ़म है, और अल्लाह ख़ूब सुननेवाला ख़ूब देखनेवाला है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا كُوۡنُوۡا قَوّٰمِيۡنَ
بِالۡقِسۡطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ وَلَوۡ عَلٰۤى
اَنۡفُسِكُمۡ اَوِ الۡوَالِدَيۡنِ وَالۡاَقۡرَبِيۡنَ ۚ
اِنۡ يَّكُنۡ غَنِيًّا اَوۡ فَقِيۡرًا فَاللّٰهُ اَوۡلٰى
بِهِمَا ۟ فَلَا تَتَّبِعُوا الۡهَوٰۤى اَنۡ
تَعۡدِلُوۡا ۚ وَاِنۡ تَلۡوٗۤا اَوۡ تُعۡرِضُوۡا فَاِنَّ
اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ خَبِيۡرًا ﴿۱۳۵﴾

135. ऐ ईमानवालो! तुम इन्साफ़ पर मज़बूती के साथ क़ाइम रहनेवाले (मह़ज़) अल्लाह के लिए गवाही देनेवाले हो जाओ ख़्वाह (गवाही) ख़ुद तुम्हारे अपने या (तुम्हारे) वालिदैन या (तुम्हारे) रिश्तेदारों के ही ख़िलाफ़ हो, अगरचे (जिसके ख़िलाफ़ गवाही हो) मालदार है या मोह़ताज, अल्लाह उन दोनों का (तुम से)ज़ियादा ख़ैरख़्वाह है । सो तुम ख़्वाहिशे नफ़्स की पैरवी न किया करो कि अ़द्ल से हट जाओ (गे) और अगर तुम (गवाही में) पेचदार बात करोगे या (ह़क़ से) पहलू तही करोगे तो बेशक अल्लाह उन सब कामों से जो तुम कर रहे हो ख़बरदार है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اٰمِنُوۡا بِاللّٰهِ

136. ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह पर और उसके

وَرَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْ نَزَّلَ عَلٰى
رَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنْ
قَبْلُ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ
وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ
فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ﴿۱۳۶﴾

रसूल (ﷺ) पर और उस किताब पर जो उसने अपने रसूल (ﷺ) पर नाज़िल फ़रमाई है और उस किताब पर जो उसने (इससे) पहले उतारी थी ईमान लाओ, और जो कोई अल्लाह का और उसके फ़रिश्तों का और उसकी किताबों का और उसके रसूलों का और आख़िरत के दिन का इन्कार करे तो बेशक वोह दूरदराज़ की गुमराही में भटक गया।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ
اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا
لَّمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا
لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيْلًا ﴿۱۳۷﴾

137. बेशक जो लोग ईमान लाए फिर काफ़िर हो गए, फिर ईमान लाए फिर काफ़िर हो गहे फिर कुफ़्र में और बढ़ गए तो अल्लाह हरगिज़ (येह इरादा फ़रमानेवाला) नहीं कि उन्हें बख़्श दे और न (येह कि) उन्हें सीधा रास्ता दिखाए।

بَشِّرِ الْمُنٰفِقِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ عَذَابًا
اَلِيْمَا ۙ﴿۱۳۸﴾

138. (ऐ नबी !) आप मुनाफ़िक़ों को येह ख़बर सुना दें कि उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।

الَّذِيْنَ يَتَّخِذُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ
اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ
اَيَبْتَغُوْنَ عِنْدَهُمُ الْعِزَّةَ فَاِنَّ
الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ﴿۱۳۹﴾ؕ

139. (येह) ऐसे लोग (हैं) जो मुसलमानों की बजाए काफ़िरों को दोस्त बनाते हैं । क्या येह उनके पास इ़ज़्ज़त तलाश करते हैं ? पस इ़ज़्ज़त तो सारी अल्लाह (तआ़ला) के लिए है।

وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ اَنْ
اِذَا سَمِعْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ يُكْفَرُ بِهَا وَ
يُسْتَهْزَاُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوْا مَعَهُمْ
حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖٓ ۚ
اِنَّكُمْ اِذًا مِّثْلُهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ جَامِعُ

140. और बेशक (अल्लाहने) तुम पर किताब में येह (हुक्म) नाज़िल फ़रमाया है कि जब तुम सुनो कि अल्लाह की आयतों का इन्कार किया जा रहा है और उनका मज़ाक़ उड़ाया जा रहा है तो तुम उन लोगों के साथ मत बैठो यहां तक कि वोह (इन्कार और तमस्ख़ुर को छोड़ कर) किसी दूसरी बात में मशग़ूल हो जाएं। वरना तुम भी उन्हीं जैसे हो जाओगे । बेशक अल्लाह मुनाफ़िक़ों और

الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْكٰفِرِيْنَ فِيْ جَهَنَّمَ
جَمِيْعًا ۙ﴿١٤٠﴾

काफ़िरों सब को दोज़ख़ में जमा' करनेवाला है।

الَّذِيْنَ يَتَرَبَّصُوْنَ بِكُمْ ۚ فَاِنْ كَانَ
لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللّٰهِ قَالُوْٓا اَلَمْ نَكُنْ
مَّعَكُمْ ۖ وَ اِنْ كَانَ لِلْكٰفِرِيْنَ
نَصِيْبٌ ۙ قَالُوْٓا اَلَمْ نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ
وَ نَمْنَعْكُمْ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ فَاللّٰهُ
يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَلَنْ
يَّجْعَلَ اللّٰهُ لِلْكٰفِرِيْنَ عَلَى
الْمُؤْمِنِيْنَ سَبِيْلًا ﴿١٤١﴾ ع ٢٠ ١٧

141. वोह (मुनाफ़िक़) जो तुम्हारी (फ़त्हो शिक्सत की) ताक में रेहते हैं, फिर अगर तुम्हें अल्लाह की तरफ़से फ़त्ह नसीब हो जाए तो केहते हैं : क्या हम तुम्हारे साथ न थे? और अगर काफ़िरों को (ज़ाहिरी फ़त्ह में से) कुछ हिस्सा मिल गया तो (उनसे) केहते हैं : क्या हम तुम पर ग़ालिब नहीं हो गए थे और (इसके बावजूद) क्या हमने तुम्हें मुसलमानों (के हाथों नुक़्सान) से नहीं बचाया? पस अल्लाह तुम्हारे दरमियान क़ियामत के दिन फ़ैसला फ़रमाएगा, और अल्लाह काफ़िरों को मुसलमानों पर (ग़ल्बा पानेकी) हरगिज़ कोई राह न देगा।

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَهُوَ
خَادِعُهُمْ ۚ وَاِذَا قَامُوْٓا اِلَى الصَّلٰوةِ
قَامُوْا كُسَالٰى ۙ يُرَآءُوْنَ النَّاسَ
وَلَا يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ اِلَّا قَلِيْلًا ۙ﴿١٤٢﴾

142. बेशक मुनाफ़िक़ (ब-ज़ो'मे ख़ीश) अल्लाह को धोका देना चाहते हैं हालां कि वोह उन्हें (अपने ही) धोके की सज़ा देनेवाला है, और जब वोह नमाज़के लिए खड़े होते हैं तो सुस्ती के साथ (मह्‌ज़) लोगों को दिखाने के लिए खड़े होते हैं और अल्लाह को याद (भी) नहीं करते मगर थोड़ा।

مُّذَبْذَبِيْنَ بَيْنَ ذٰلِكَ ۖ لَآ اِلٰى
هٰٓؤُلَآءِ وَ لَآ اِلٰى هٰٓؤُلَآءِ ؕ
وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ
سَبِيْلًا ﴿١٤٣﴾

143. इस (कुफ़्र और ईमान) के दरम्यान तज़ब्जुब में हैं न उन (काफ़िरों) की तरफ़ हैं और न उन (मोमिनों) की तरफ़ हैं, और जिसे अल्लाह गुमराह ठेहरा दे तो आप हरगिज़ उसके लिए कोई (हिदायत की) राह न पाएंगे।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا
الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ

144. ऐ ईमानवालो ! मुसलमानों के सिवा काफ़िरों को दोस्त न बनाओ, क्या तुम चाहते हो कि (ना फ़रमानों

الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿۱۴۴﴾

की दोस्ती के ज़रीए) अपने ख़िलाफ़ अल्लाह की सरीह़ हुज्जत क़ाइम कर लो।

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ فِي الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ نَصِيْرًا ﴿۱۴۵﴾ۙ

145. बेशक मुनाफ़िक लोग दोज़ख़ के सबसे निचले दर्जे में होंगे, और आप उनके लिए हरगिज़ कोई मददगार न पाएंगे।

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَاعْتَصَمُوْا بِاللّٰهِ وَاَخْلَصُوْا دِيْنَهُمْ لِلّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ وَسَوْفَ يُؤْتِ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۱۴۶﴾

146. मगर वोह लोग जिन्होंने तौबा कर ली वोह संवर गए और उन्होंने अल्लाह से मज़बूत तअ़ल्लुक़ जोड़ लिया और उन्होंने अपना दीन अल्लाह के लिए ख़ालिस कर लिया तो येह मोमिनों की संगत में होंगे, और अ़न क़रीब अल्लाह मो'मिनों को अ़ज़ीम अज्र अ़ता फ़रमाएगा।

مَا يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ اِنْ شَكَرْتُمْ وَاٰمَنْتُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ شَاكِرًا عَلِيْمًا ﴿۱۴۷﴾

147. अल्लाह तुम्हें अ़ज़ाब दे कर क्या करेगा अगर तुम शुक्र गुज़ार बन जाओ और ईमान ले आओ, और अल्लाह (हर ह़क़ का) क़द्र शनास है (हर अ़मल का) ख़ूब जाननेवाला है।